पाठ-1

संसाधन

आप अपने दैनिक जीवन में घर और आसपास पानी, रिक्शा, साइकिल, बस, पुस्तक, कुर्सी, घरों में बिजली, पंखा आदि अवश्य देखते होंगे। क्या आपने कभी सोचा है कि ये सब क्या हैं ?

आइए जानें-

आपको प्यास लगने पर आप जो जल पीते हैं, घरों में प्रयोग की जाने वाली बिजली, स्कूल से घर पहुँचने के लिए उपयोग में लाई गई साइकिल, रिक्शा या बस, अध्ययन के लिए पाठ्यपुस्तक, बैठने के लिए कुर्सी-मेज, ये सभी संसाधन हैं। इनमें से सभी वस्तुओं का उपयोग आप द्वारा किया गया है अर्थात् इन सभी वस्तुओं में आपकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक वस्तु या पदार्थ जिसकी उपयोगिता हो, संसाधन कहलाती है। दूसरे शब्दों में- संसाधन होते नहीं, बल्कि प्रकृति में उपहार स्वरूप उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं को मनुष्य अपने ज्ञान और तकनीकी के प्रयोग से उसे अपने लिए उपयोगी बनाता है। जैसे-धरती पर कोयला लाखों वर्षों से उपलब्ध था किन्तु कोयला तब संसाधन कहा जाने लगा जब मनुष्य ने उससे आग उत्पन्न करने की क्षमता की खोज की।

कुछ संसाधनों का आर्थिक मूल्य होता है, जबकि कुछ संसाधनों का आर्थिक मूल्य नहीं होता है। जैसे-धातुओं, रसायनों, फसलों, वस्तुओं आदि का आर्थिक मूल्य होता है, जबकि पर्वतीय भाग या मरुस्थलीय क्षेत्र के सुंदर दृश्य केवल मनोरंजन करते हैं, इनका आर्थिक मूल्य नहीं होता है। किन्तु ये सभी संसाधन हैं।

संसाधनों के प्रकार-

सामान्यतः संसाधनों को प्राकृतिक, मानव निर्मित और मानव संसाधन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है-

संसाधन

प्राकृतिक संसाधन	*मानवनिर्मित संसाधन*	*मानव संसाधन*
•जल	•घर	
•सूर्य का प्रकाश	•सड़क व पुल	
•खनिज पदार्थ	•विद्यालय	
•वन	• अस्पताल	
•मृदा (मिट्टी) आदि	• मशीनें, बाँध, कारखाने आदि	

प्राकृतिक संसाधन-

ऐसे संसाधन जो प्रकृति से मानव को उपहार स्वरूप मिले हैं और जिन्हें मनुष्य बिना किसी संशोधन के ही उपयोग करता है, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। इन्हें पर्यावरण से सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। क्या आप भी कुछ ऐसे प्राकृतिक संसाधनों के नाम बता सकते हैं ?

प्राकृतिक संसाधनों को सामान्यतः नवीकरणीय और अनवीकरणीय संसाधनों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

चित्र 1.1 प्राकृतिक संसाधन (जल)

चित्र 1.2 प्राकृतिक संसाधन (बन)

नवीकरणीय संसाधन (Renewable Resources)

ऐसे संसाधन, जो प्रकृति में असीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। जिनको प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा या मानव द्वारा नवीकृत अथवा पुनः पूरित किया जा सकता है, 'नवीकरणीय संसाधन' कहलाते हैं। सूर्य प्रकाश, पवन, वायु (Air) आदि कभी न समाप्त होने वाले संसाधन हैं, अतः इन्हें अक्षयशील संसाधन (inexhaustable Resources) भी कहते हैं। ये पृथ्वी पर असीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। मनुष्य इनका उपयोग चाहे जितनी मात्रा में करे, इनकी मात्रा पर कोई

विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। यद्यपि मानवीय क्रियाकलापों से ये संसाधन अनुपयोगी (Unusable) हो सकते हैं। जैसे-वायु प्रदूषण से हमें सांस लेने में कठिनाई होती है। कुछ प्राकृतिक संसाधन मानवीय प्रयासों से भी उत्पन्न होते हैं, जैसे- पौधे को लगाकर हम वन संसाधन को बढ़ा सकते हैं।

अनवीकरणीय संसाधन(Non Renewable Resources)-

ऐसे प्राकृतिक संसाधन जो भूतकाल में निर्मित हुए हैं तथा जिनका भंडार सीमित मात्रा में हैं, अनवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं। इन संसाधनों का एक बार उपयोग कर लेने के बाद इन्हें पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है। प्रकृति में उपलब्ध धातुएँ और जीवाश्मी ईंधन, (कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस) अनवीकरणीय संसाधन हैं, क्योंकि ऐसे संसाधनों के पुनः निर्मित होने में हजारों वर्ष लग जाते हैं, जो कि मानव जीवन की अवधि से बहुत अधिक है। इसलिए ऐसे संसाधनों का संरक्षण बहुत आवश्यक है, नहीं तो भावी पीढ़ी के लिए ये उपलब्ध नहीं हो सकेंगे।

मानव निर्मित संसाधन-

जब प्रकृति में उपलब्ध किसी पदार्थ का मूलरूप मानव द्वारा अपनी उपयोगिता के आधार पर बदल दिया जाता है तो वह मानव निर्मित संसाधन कहलाता है।

आइए जानें-

लौह खनिज उस समय तक संसाधन नहीं था, जब तक कि लोगों ने उससे लोहा बनाना नहीं सीखा था। लोग जब लौह खनिज से लोहा बनाने की कला सीख गए, तो इससे पुल, बाँध, सड़क, वाहन, दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुएँ बनाने लगे। इस प्रकार अब लोहे से निर्मित वस्तुएँ मानव निर्मित संसाधन हैं।

चित्र 1.3 मानव निर्मित संसाधन(बांध)

आप अपने परिवेश में उपयोग की जा रही मानव निर्मित संसाधनों की सूची बनाइए।

मानव संसाधन-

मनुष्य स्वयं भी एक विशिष्ट प्रकार का संसाधन है। अतः लोगों को 'मानव संसाधन' कहा जाता है। मानव द्वारा प्रकृति का बेहतर उपयोग तभी किया जा सकता है जब उसके पास ज्ञान, कौशल और तकनीकी उपलब्ध हो। स्वास्थ्य और शिक्षा, लोगों को बहुमूल्य संसाधन बनाने में मदद करते हैं।

संसाधन संरक्षण-

कल्पना कीजिए यदि पृथ्वी का सारा जल सूख जाए, सारे वृक्ष कट जाएँ, तो क्या-क्या होगा ?

> **क्या आप जानते हैं ?**
>
> भारत सरकार के अधीन **मानव संसाधन विकास मंत्रालय** है। 1985 में इस मंत्रालय की स्थापना लोगों के कौशल को बढ़ाने के लिए की गई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि लोग देश के लिए कितने महत्त्वपूर्ण संसाधन हैं। आप भी अपने देश के लिए बहुमूल्य संसाधन हैं।

आइए समझें-

जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है। जल के अभाव में जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों एवं स्वयं मानव जाति का जीवन असम्भव हो जाएगा। ठीक इसी प्रकार यदि हम नवीकरणीय संसाधनों के उपयोग के प्रति सतर्क नहीं हैं तो एक दिन वे भी हमारे लिए दुर्लभ हो सकते हैं। जबकि अनवीकरणीय संसाधन तो निश्चित ही समाप्त हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में संसाधनों के अन्धाधुंध उपयोग पर लगाम लगाने की जरूरत है। संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को ही संसाधन-संरक्षण कहते हैं। ध्यान रहे, संसाधन संरक्षण का अर्थ संसाधनों के प्रयोग को पूर्णतः रोकना नहीं है, बल्कि इस प्रकार से उपयोग करना है कि वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ भावी पीढ़ी भी इनसे लाभान्वित हो सके। ऐसा विकास 'सतत पोषणीय विकास' (Sustainable Development) कहलाता है।

सतत पोषणीय विकास के क्षेत्र-

- पृथ्वी की जीवन शक्ति और विविधता का संरक्षण करना।
- प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास को न्यूनतम करना।
- पर्यावरण के प्रति व्यक्तिगत व्यवहार और अभ्यास में परिवर्तन लाना।
- समुदाय को अपने पर्यावरण की देखभाल करने योग्य बनाना।
- मानव जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाना।

क्या आप जानते हैं ?

संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) ने 25 सितम्बर 2015 को सतत् पोषणीय विकास के लिए वर्ष 2030 तक 17 लक्ष्यों को पूरा करने का संकल्प लिया है। इन संकल्पों को पूरा करने हेतु भारत सहित विश्व के अनेक देशों ने अपनी सहमति प्रदान की है। इन लक्ष्यों में 5–P पर बल दिया गया है– लोग (People), ग्रह (Planet), समृद्धि (Prosperity), शान्ति (Peace) और भागीदारी (Partnership)।

संयुक्त राष्ट्र जलवायु निकाय (U.N.F.C.C.) के समक्ष भारत ने जलवायु पहल योजना 2 अक्टूबर 2015 को सौंपी। जिसमें भारत ने वर्ष 2020 तक अपनी 40% ऊर्जा आवश्यकता का गैर जीवाश्मी स्रोतों (सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल विद्युत ऊर्जा, बायोमास, परमाणु ऊर्जा) से प्राप्त करने का वचन दिया है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) संसाधन किसे कहते हं ै ?

(ख) अक्षयशील संसाधन कौन-कौन से हैं ?

(ग) जीवाश्मी ईंधन अनवीकरणीय संसाधन क्यों हैं ?

(घ) सतत पोषणीय विकास किसे कहते हैं ?

(ङ) प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के उपाय लिखिए।

2. निम्नलिखित के सही जोड़े बनाइए-

कोयला	मानवपूरित संसाधन
सौर-प्रकाश	जीवाश्मी संसाधन
वन	अक्षयशील संसाधन

3. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-**

(क) पुल एक .... संसाधन है।

(ख) उपजाऊ भूमि .... संसाधन है।

(ग) संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग .... कहलाता है।

परियोजना कार्य (Project Work)

- अपने परिवेश में उपलब्ध प्राकृतिक एवं मानवनिर्मित संसाधनों की सूची बनाइए।
- अपने साथियों के साथ मिलकर विभिन्न संसाधनों के संरक्षण की योजना बनाइए।
- सतत पोषणीय विकास के बारे में जानकारी करके आपस में साझा कीजिए।